डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा, कॉलेज, आरा

Date 05/06/2021

बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा), विषय - संस्कृत
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

रेणुमयीव स्वच्छमपि कलुषीकरोति । यथायथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जल-मलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति ।

अर्थ-

(रेणुमयीव) धूलिमयी यह लक्ष्मी (स्वच्छमपि) स्वच्छ वस्तु को भी (कलुषीकरोति) कलुषित कर देती है। (यथायथा) और जैसे-जैसे (इयं चपला) यह चंचला लक्ष्मी प्रदीप्त होती है (तथातथा) वैसे-वैसे (दीपशिखेव) दीपशिखा की भाँति (कज्जल-मलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति) काजल के समान मलिन कर्मों को ही उगलती है।

टिप्पणी-

यह लक्ष्मी धूलिमयी सी बनी निर्मल पदार्थों को भी मलिन कर देती है। यहाँ स्पष्ट विरोध की प्रतीति होती है किन्तु 'रजोगुणमयी लक्ष्मी' अहंकार आदि दोषों से शून्य व्यक्ति को भी अहंकार से युक्त कर देती है, - ऐसा अर्थ करने पर विरोध का परिहार हो जाता है। 'रेणुमयीव' में 'उत्प्रेक्षा' है। उत्प्रेक्षा और विरोधाभास दोनों अलंकार यहाँ अंग अंगी भाव से प्रयुक्त हुए हैं, अतः दोनों का 'सङ्कर' हुआ। दीपशिखा जितनी अधिक दीप्त होगी उतना ही काजल का मैल उगलेगी, इसी प्रकार

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." —Mahatma Gandhi

IND CamScanner App

Date __/__/____

Page No. ____

यह चंचला लक्ष्मी भी जितनी अधिक आविर्भूत होती है उतने ही परहिंसा आदि कज्जलवत मलिन पापकर्मों को प्रकट करती है। 'एव' का आशय यह है कि प्रायः लक्ष्मी काली करतूतों को ही जन्म देती है न कि शोभन कर्मों को। यहाँ लक्ष्मी की तुलना दीपशिखा से तथा उसके द्वारा प्रवर्तित पापकर्मों की तुलना कज्जल से की गई है तथा उपमान, उपमेय, वाचक पद तथा साधारण धर्म सभी शब्दतः उपात्त हैं, अतः 'पूर्णोपमा' अलंकार है। 'उद्वमति' आदि शब्दों का अभिधार्थ में प्रयोग ग्राम्य व अभद्र होता है किन्तु साहित्य में - लक्ष्यार्थ में इन्हीं शब्दों का प्रयोग चारुत्व उत्पन्न कर देता है - "निष्ठ्यूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयम्। अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते" ॥ (काव्यादर्श, 1.95)।

पदव्याख्या -

रेणुमयी = रेणु + मयट् + ङीप् प्र० ए०।

कलुषीकरोति = कलुष + च्वि कृ + लट् प्र० पु० ए०।

दीपशिखा = दीपस्य शिखा (षष्ठी तत्पु०)।

कज्जलमलिनम् = कज्जलवत् मलिनम् (उप०)।

पक्षे - कज्जलमेव मलिनं कर्म (क० धा०)।

दीप्यते = दीप् + लट् प्र० पु० ए०।

उद्वमति = उद् + वम् + लट् प्र० पु० ए०॥ इति॥

IND CamScanner App